सब अंग मेरे टुकड़े करूं, भूक करूं देह जिउ।
सो वार डारूं तुम दिस पर, इत सेवा हुई कहां पिउ।। २१ ।।

अब मैं चाहती हूं कि अपने तन के टुकड़े कर डालूं और जीव तथा शरीर का चूरा बना दूं और आपके चरणों में न्यौछावर कर दूं। मुझसे धनी की सेवा क्यों नहीं हुई?

हड्डियां जारूं आग में, मांहें मांस डारूं सिर।
ए भूली दुख क्योंए न मिटे, ए समया न आवे फिर।। २२ ।।

हड्डियों को आग में जलाऊं। आग में तन का मांस और सिर डाल दूं। फिर भी ऐसी भूल करने का दुःख नहीं मिटता। गया समय हाथ नहीं आता।

जरा जरा मेरे जीव का, विरहा तेरा करत।
चरनें ल्यो इंद्रावती, पेहेले जगाए के इत।। २३ ।।

हे धनी ! अब मेरे तन का रोम-रोम (जर्रा-जर्रा) आपके विरह में दुःखी है।-इसलिए यहां पहले जागृत करके अपने चरणों में ले लो।

।। प्रकरण ।। ८ ।। चौपाई ।। २०५ ।।

चौपाई प्रगटी है

एक लवो याद आवे सही, तो जीव रहे क्यों काया ग्रही।
अब सुनियो साथ कहूं विचार, भूले आपन समें निरधार।। १ ।।

हे साथजी! धनी के वचनों में से थोड़ा सा भी याद आ जाए, तो जीव इस शरीर को कैसे पकड़कर रखेगा? हे साथजी! मेरे विचार में हमसे अवश्य ही भूल हुई है।

गयो अवसर फेर आयो है हाथ, चेतन कर दिए प्राणनाथ।
तब जो वासना बाई रतन, लीलबाई के उदर उतपन।। २ ।।

मौका जो हाथ से गया था फिर मिल गया है। अपने प्राणनाथ ने हमको सावचेत (सतर्क) कर दिया है। उस समय जो बिहारीजी, रतनबाई की वासना है और लीलबाई उनकी माताश्री हैं।

श्री देवचन्दजी पिता परवान, देख के आवेस दियो निरवान।
वचन धनी के कहे निरधार, आवेस पिउजी को है अपार।। ३ ।।

श्री देवचन्द्रजी उनके पिताश्री हैं। उन्होंने परखकर और विचारकर मुझे अपना आवेश दिया और तारतम दिया। धनी के कहे हुए वचनों के अनुसार पियाजी के आवेश अपार हैं।

इन बानिऐं ब्रह्मांड जो गले, तो वासना वानी से क्यों पीछी टले।
वासना कारन बांधे बंध, कई भांते अनेक सनंध।। ४ ।।

इस वाणी से तो सारे ब्रह्माण्ड को एक रस करके अखण्ड करना है। आत्माएं वाणी से पीछे क्यों रहेंगी? वासनाओं के वास्ते धनी ने तरह-तरह के उपाय किए। जगाने के लिए बन्धन बांधे।

ए वानी कही मेरे धनी, आगे कृपा होसी घनी।
हरखें साथ जागसे एह, रेहेसे नहीं कोई संदेह।। ५ ।।

यह वाणी मेरे धनी ने कही है। आगे बड़ी भारी कृपा होगी। बड़ी खुशी से साथ जागेंगे। सन्देह बाकी नहीं रह जाएंगे।

Nijanand App

साथ को घरों ले जाना सही, कोई माया में ना सके रही।
खैंचे सबों को ए वानी, फिरसी घरों धनी पेहेचानी।। ६ ।।

सुन्दरसाथ को अवश्य ही घर ले जाना है। कोई माया में नहीं रह सकेगा। यह वाणी सबको अपनी तरफ खींचती है। सुन्दरसाथ धनी को पहचानकर वापस अपने घर जाएंगे।

भी वाही चरचाने वाही बान, वचन केहेते जो परवान।
बृज रास श्रीधाम के सुख, साथ को केहेते जो श्रीमुख।। ७ ।।

(श्री इन्द्रावतीजी कहती हैं कि यह धनी मेरे अन्दर आकर बैठ गए हैं इसलिए) अब फिर से वही चर्चा, वही वचन जो धनी निश्चित रूप से प्रमाण देकर कहते थे, वही वाणी जो बृज रास और धाम के सुख को अपने श्रीमुख से सुनाते थे, वह फिर से शुरू हो गई है।

पख पचीस वरनवे जेह, भी सुख वल्लभ देवे एह।
अंतरध्यान समे ज्यों भए, भी आए वचन पिया सोई कहे।। ८ ।।

परमधाम के पच्चीस पक्षों का जिस तरह से वर्णन करते थे और सुख देते थे, वही मेरे तन में धनी बैठकर देते हैं। रास में जैसे पहले अन्तर्ध्यान हुए और फिर आ गए, उसी प्रकार श्री देवचन्द्रजी के तन को छोड़कर अब मेरे तन में बैठकर वही पिया, वही वाणी सुना रहे हैं।

पेहेले फेरे हुआ है ज्यों, भी इत पिया ने किया है त्यों।
सोई पिया और सोई दिन, देखो तारतम के वचन।। ९ ।।

पहले फेरे 'रास' में धनी ने जो किया था, अब यहां भी धनी ने वैसे ही किया है। तारतम वाणी से विचार कर देखो। यह वही धनी हैं, वही दिन हैं।

सोई घड़ी ने सोई पल, मायाऐं बीच डारयो वल।
साथ को खिन न्यारे ना करे, बिना साथ कहूं पांउ ना धरे।। १० ।।

वही घड़ी है, वही पल है, किन्तु माया ने बीच में कोई ऐसी आंकड़ी (गांठ) लगा रखी है, वरना धनी साथ से एक पल के लिए अलग नहीं होते और साथ के बिना कहीं जाते भी नहीं।

बेर ना हुई एक अधखिन, किया मायाऐं बिछोहा घन।
मारकंड माया द्रष्टांत, मांगी धनी पे करके खांत।। ११ ।।

परमधाम में तो आधे क्षण की भी देर नहीं हुई है। यहां माया ने बड़ा भारी वियोग कर दिया है। उसी प्रकार जैसे मार्कण्डेय का हाल हुआ था। उसने भी अपने परमात्मा (नारायण) से माया मांगी थी।

देखो माया को वृतांत, ए दूर होए तो पाइए स्वांत।
ततखिन कंपमान सो भयो, माया मिने भिलके गयो।। १२ ।।

देखो, यह माया की हकीकत है। यह हम से हटे तो हमको शान्ति मिले। मार्कण्डेय भी उसी पल कांपकर माया में मिल गया था।

कल्पांत सात छियासी जुग, कियो मायाऐं बेसुध एते लग।
कछुए ना भई खबर, अति दुख पायो रिखीश्वर।। १३ ।।

उसे सात कल्पान्त और छियासी युग तक माया ने बेसुध रखा। इस समय में मार्कण्डेय को कुछ सुध नहीं आई, इसलिए बड़ा कष्ट उठाया।

Nijanand App

तब नारायनजीऐं कियो प्रवेस, देखाई माया लवलेस।
फिरी सुरत आए नारायन, याद आवते गए निसान।। १४ ।।

तब नारायणजी ने प्रवेश कर माया का छोटा स्वरूप (आकार) दिखाया। नारायणजी के आने पर मार्कण्डेय सावचेत हुए और उन्हें मूल स्थान की याद आई।

याद आया सरूप बैठा जांहें, तब उड़ गई माया जानों हती नांहें।
जाग देखे तो सोई ताल, बीच मायाऐं कियो ऐसो हाल।। १५ ।।

उसे मार्कण्डेय ताल याद आया जहां से बैठकर देख रहा था और तब माया उड़ गई। ऐसा लगा मानो माया थी ही नहीं। जागकर उसने देखा, तो वही वह ताल है और बीच में माया ने बेसुध कर दिया था।

माया की तो एह सनंध, निरमल नेत्रे होइए अंध।
ता कारन कियो प्रकास, तारतम को जो उजास।। १६ ।।

माया की तो यही हकीकत है कि आंखों से देखते हुए भी अन्धे हो जाते हैं। इस वास्ते ही यह दृष्टान्त दिया है जिससे तुम्हें तारतम की पहचान हो जाए।

सो ए लेके आए धनी, दया आपन ऊपर है घनी।
जाने देखसी माया न्यारे भए, तारतम के उजियारे रहे।। १७ ।।

इसी तारतम ज्ञान को लेकर धनी आए हैं और अपने ऊपर बड़ी कृपा की है। हमने समझा था कि हम तारतम ज्ञान के उजाले के हो जाने से माया को माया से जुदा होकर देखेंगे।

भले तारतम कियो प्रकास, देखाया माया में अखंड विलास।
तारतम वचन उजाला कर्‌या, दूजा देह माया में धर्‌या।। १८ ।।

हे धनी! आपने तारतम वाणी से हमें अच्छा ज्ञान दिया है जिससे माया में बैठे होने पर भी हमें अखण्ड परमधाम के आनन्द दिखलाए। तारतम वाणी से ही यह ज्ञान हुआ कि धनी हमारे वास्ते दूसरा तन धारण कर माया में आए हैं।

।। प्रकरण ।। ९ ।। चौपाई ।। २२३ ।।

सुन्दरसाथ की विनती

साखी– **विनती एक सुनो मेरे प्यारे, कहूं पिउजी बात।**
आए प्रगटे फेर कर, करी कृपा देख अपन्यात।। १ ।।

हे मेरे धनी ! मैं विनती करती हूं। मेरी एक बात सुनो। आपने अपनी समझ कर कृपा की है और दुबारा प्रगट हुए हैं।

श्री देवचन्दजी हम कारने, निध तुमारे हिरदे धरी।
वचन पालने आपना, साथ सकल पर दया करी।। २ ।।

सुन्दरसाथ कहते हैं कि श्री देवचन्द्रजी ने हमारे वास्ते यह न्यामत तारतम वाणी आपके हृदय में दी है। वायदों को पूर्ण करने के लिए ही सुन्दरसाथ पर मेहर की है और आपके हृदय में आ विराजे हैं।

Nijanand App